रहसा चौरी

रहसा चौरी

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

RAHSA CHAURI

Anthology of Maithili Verse by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88811-38-5

दाम: 150/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2019)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन

तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली

जिला- सुपौल, बिहार: 847452

मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com

ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com

मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,

https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452

अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

रहसा चौरीक राग-विराग

समाज, संस्कार, परिवेश, पारिस्थिकी आदिक संवाहक साहित्य होइत अछि। रचनाकार अपन दृष्टिसँ इतिहास, वर्त्तमान आ भविष्यकेँ तौलैत अपन कृतिकेँ विस्तार देबाक परियास करैत छैथ। प्रकृति अपन इतिहास दोहराबैत अछि। ई बाढ़ि, भुमकम, रौदी, गरमी, बरखा आदि प्राकृतिक प्रक्रियाक मादे सहजे देखल जा सकैत अछि। सभ साल ने बाढ़िये अबै छै आ ने रौदीए होइ छइ। तहिना सभ साल एक्केरंग बरखे होइत अछि आ ने जाड़े होइत अछि। गरमी आ भुमकमक विषयमे सेहो तहिना अछि। निश्चित रूपे पारिस्थिकीक प्रभाव लोकक जिनगीपर पड़ैत अछि।

रचनाकार मनुखक जिनगीक आनन्द उन्माद, दुख, परिताप आ नोरसँ अलग नहि रहि सकैत अछि। किछु रचनाकार, जेतए भक्ति आ श्रृंगारक रस्ता अख्तियार कऽ लइ छैथ तँ किछु मनुखक तार-तार होइत जिनगीकेँ अपनियाबैत अपन साहित्यकेँ मनुखक जिनगीक ऐना बनबैक परियास करै छैथ।

मैथिलीक सशक्त रचनाकार जगदीश प्रसाद मण्डलजी मिथिलाक माटि-पानिक रचनाकर छैथ। हिनक सभ विधामे मिथिलाक माटि पहिल पात्रक रूपमे अभरैत अछि। कथा उपन्यास,

नाटक, कविता आदिमे हिनक गाम, गामक माटि, गामक लोक, बाड़ी-झाड़ी, खेत-खरिहाँन, कलम-बँसबिट्टी, पाबैन-तिहार, माय, काकी, बाबी, बिधवा, सधवा, नचार इत्यादिकेँ हम सहजे देखि सकै छी। हुनक हँसी-खुशी, वियोग-व्यथा, झगड़ा-झंझट, मुड़ण-उपनैन, बिआह-दुरागमन, मरण-हरण सभ समाजिक, पारिवारिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक भावक अभिव्यक्ति मण्डलजीक विविध विधामे विद्यमान छैन।

आधुनिक जिनगीक छल-छद्म आ 'हम पीर मियाँ'क भाव-बोधसँ दूर किसानी जिनगी जीबैत गत बीस बर्खमे साएसँ अधिक पोथीक प्रकाशन भऽ चुकल छैन।

'रहसा चौरी' बहुत दिनक बाद कविता संग्रह रूपमे प्रकाशित होमए जा रहल छैन। प्रत्येक तिमाही 'सगर राति दीप जरय' कथा गोष्ठीमे हिनक कम-सँ-कम जोड़ भरि पोथी प्रकाशित भऽ लोकार्पित होइत रहलैन अछि। दिसम्बर 2019क 'सगर राति दीप जरय'क कथा गोष्ठीमे अहू पोथीक लोकापण हेबाक सम्भावना अछि।

'रहसा चौरी' संग्रहमे कुल चालिस गोट मुक्तक प्रकाशित छैन। जिनगीक घाट-बाटपर देखल-सुनल आ अखियासल जिनगीक लेखा-जोखाक ई पोथी खतियान थिक।

संग्रहक पहिल कविता 'बाढ़िक सनेस'मे कमला मैयाक एहन सनेसक चर्च भेल अछि जे किसान-मजदूरक जिनगीकेँ अपसियाँत केने अछि-

"खोंछिक सनेसो तेहने
ठेंगी, खचरलत्ती ओ हराशंख।

हराशंखो तेहने गढ़ल छै

ने छी डोका ने छी शंख..!”

खचरलत्तीक सनेस दऽ कमला मैयाक जेना खेत-पथारक संग किसानकेँ तंग-तंग केने छै ओहिना ‘ठेंगी’ किसान-मजूरकेँ खेत-पथारमे चलब दुष्कर केने छइ।

किसान, खेत-पथार आ भिन्न-भिन्न मोसमक किसान संग सम्बन्धक अनेक कविता ऐ संग्रहमे सङ्कलित अछि। ‘हथियाक झटकी’, ‘बकरी भेराड़ी’, ‘नव फल’, ‘चौरीक धनकटनी’, ‘किसान’ अगो-लोढ़ा, ‘ठनका’, ‘शिवचरण’ ऐ संग्रह किसानी जिनगीसँ जुड़ल कविता अछि। ओना, किसानी जिगनीक व्यापक अर्थ आत्मनिर्भर संस्कृति अछि, तद्नुसार जँ कहल जाए तँ मण्डलजीक अधिकांश रचना आत्मनिर्भर संस्कृतिमे बान्हल रहैत अछि।

‘चौरीक धनकटनी’ किसानी जिनगीक यथार्थ क्रिया-व्यापारक कविता अछि। कातिक-अगहन के कहए पूस आबि गेल मुदा चौरीक धनकटनी पछुआएले छइ। कातिक-अगहनक धनटनी बड़ असान मुदा पूस मासमे जखन शीतलहरी चलि रहल अछि, जट्ठर पानिमे उगल-डुमल धानक एक-एकटा सीसकेँ ताकि-ताकि काटब प्राणक संग खेलवाड़ करब होइ छइ।

मण्डलजी चौरीमे ठाढ़ जेना समय आ किसानक धैर्यकेँ अपनेसँ जाँचि रहल छैथ-

“अकाससँ पताल धरि

कोणे-सान्हिये ठंढ पकड़लक।

ठरल पानि ठाढ़ भऽ तपस्वी

सीस धानक हियबए लगल।”

केना कटतै धान! मरि-खपि किसान ऐ चौरीमे धान रोपै छैथ। आब काटऽ बिना धन चौरीएमे सड़ि जेतइ! नहि, जाबत जान छै किसान उपजौल धान केना छोड़ि देतइ-

“पड़ल छगुन्ता ठाढ़ तपस्वी
हँसुआ नेने पानिमे ठाढ़।
छोड़ि देब कायरता होएत
लगले केना मानि लेब हारि।
जाबे प्राण बँचल अछि
ताबे केना पीठ देखाएब।”

कविता मात्र पैघ लोकक समय बितेबाक आ मनोरंजनक साधन नहि, संघर्षरत मनुखक जिनगीक दस्तावेज सेहो होइत अछि। मण्डलजीक ‘चौरीक धनकटनी’ किसानक जिजिविषाक यथार्थपरक रचना छैन।

मिथिलाक जिनगीमे खेत-खरिहाँनक सर्वाधिक महत्तता छइ। अदौ कालसँ खेती एकमात्र जिविकाक एतै साधन छइ। बाढ़ि आ सुखारकेँ झेलैत मैथिल थाकि-हारि कऽ पलायन करबा लेल बाध्य छैथ। बाढ़ि-सुखार संग-संग चौरी सेहो मिथिलाक अभिशाप अछि। गाम-गाममे सैकड़ो बीघा जमीन सालो भरि पानिमे डुमल रहैत अछि। एतेक पैघ रकबामे पसरल जमीनसँ किसान लगभग हाथे-धोने छैथ।

‘रहसा चौरी’ कविता माध्यमसँ मण्डलजी ऐ यक्ष प्रश्नकेँ ठाढ़ करबाक प्रयास केलाहेँ, जे ऐ चौरीक समस्याक निदान किए नहि खोजल जा रहल छै-

“गामक माटिक जँ दशा एहेन

मिथिला राज केहेन हेतइ।
बाहरे-बाहरक सुसकारीसँ
गहुमनक बीख केना झड़तै।
विचार इमानक केकरा कहबै
खोलि देखू मातृकोष।
अपने-आप प्रश्न पुछि
विचार करू सम्हारि होश।"

प्रस्तुत संग्रहमे मण्डलजी खेत-खरिहाँनक संग-संग गाम-घरक अनेक आपैत-बिपैत, जिनगीक भिनसर-साँझ आदिक सेहो चर्च केने छैथ।

हमरा बिसवास अछि ई पोथी पढ़ि निश्चित रूपेँ पाठकजन भाषा आ भावक आनन्द उठौता।

- शिव कुमार प्रसाद
एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष- हिन्दी विभाग,
हरि प्रसाद साह महाविद्यालय- निर्मली

सिमरा, 1 दिसम्बर 2019

काव्य-क्रम

बाढ़िक सनेस

जइ नहाइ कोसी जाइ छी
जाइ छी कमला घाट।
अपने फुरने आबि-आबि
धो-धा देखबैए बाट।

हँसि-हँसि घरसँ निकैल
खोंछि भरने एली।
मुट्ठीए-मुट्ठी बाँटि-बाँटि
गामे-गाम बिलैह देली।

खोंछिक सनेसो तेहने
ठेंगी, खचरलत्ती ओ हराशंख।
हराशंखो तेहने गढ़ल छै
ने छी डोका ने छी शंख।

खचरलत्तीक खचरपनीसँ
तंग-तंग होइए किसान।
काटि फेकब जेतए तेतएसँ
मोछ टेरैत देखबए शान।

गाछी-बिरछी, दिशा मैदानक
रोकैक ठीका ठेंगी लेलक।

खेत-पथार टहैल-टहैल
वोन-झाड़ सेहो अपनौलक। ❑

अगो-लोढ़ा

हे गे बेटी, हे गे धीया
आइ धरि दुखक दिन कटलौं।
काल्हिसँ औत समय सुखक
राति भरि जागि मोन पाड़िहें।

बीतल साल, मास दिन दुखक।
कोन नक्षत्र आबि रहल छै
कोन सुख काल्हिसँ औतै
सेहो दे नीकसँ सुझा।

धनकटनीमे हाथ लगेबै
हाँसू धार कुटौने छी।
संग मिलि तोहूँ लोढ़िहें
लोढ़ा बीछा तोरे ने छी।

चारि साल जेते जे लोढ़लौं
अगो तँ तोहूँ दैत एलँह।
भुरकुरी ढन-ढन करैए
कुटि-चुड़ि तोहीं खेलँह।

समय पाबि खेलियौ बुच्ची
सूदि दऽ पूरा करबौ।

अगो-लोढ़ा जोड़ि-जाड़ि
मूरिक संग सूदियो देबौ।

एहेन अलछनी हमहीं हेबौ।
माए-बापसँ सूदि लेब।
महाजनीक कारोबार कऽ कऽ
महाजनीक भार देब।

नहि बेटी नहि बुच्ची, नूनू
मुँह दाबि एना नइ बाजह।
जेते गहन लगल बीच अछि
दोबरा-दोबरा मुड़ घुरेबह।

सुनि-सुनि मन तड़पैए
माए-बाप की हम्मर नहि।
बेटा-बेटी भेद केतए अछि
सेवा की हम्मर नहि। ❑

हथियाक झटकी

चढ़िते चैत पतरा कीनलौं
सालक हाथक रेखा देखलौं।
देखिते नजैर दौगल राशिपर
नाओं अक्षर तेकरा बीछिलौं।

खट-मिट्ठी राशि देखि
पाछू दिस उनैट ताकलौं।
तीन नामे लोक जनैए
देखि-देखि मोन पाड़लौं।
आगू बढ़ि उपजा लग गेलौं
पानिसँ बेसी धाने देखलौं।
हवा-विहाड़ि, ठनका भुमकमक
चर्च-बर्च केतौ ने देखलौं।

मन खुशी भेल, घरहट बाँचल
भगवान भरोसे ई साल चलतै।
घरनीक तगेदा अनठबैत
एको घर नइ ऐ साल छाड़लौं।

हथिया तँ उनाड़ी बर्खाक
झटकी केतएसँ दौगल आएल।

मनक सभ खुशी मनेमे
सभटा रहि गेल धएले-धाएल।
एकटा घर माटि पकड़लक
दोसर चोंगरा बले ठाढ़।
तेसरक कोनचारी लटकल
चारिम भीतक गरे उनाड़। ❑

रहसा चौरी

भीतर मिथिलाक ओ भूभाग
चौड़गर एकटा चौरी छै।
दूर-दूर धरि पसरल-पसरल
बिसवासू खेतीक भूमि नइ छै।
नअ मास पानिए गुड़गुड़ा
हिआ-हारि कनबो करैए।
माटिओक कर्मक फल तेहने
अपने बेथे चिचिआ रहल-ए।
तीन मास सुखा सुख पाबि
करमी, केशौर कोढ़िला सजबैए।

जिनगी-मृत्युक भय मेटा
संग मिलि सभ भाँज पुरबैए।
चारि गामक बीच बसल
नमगर-चौड़गर सीमा घेड़ैए
चारू कातक पानि गुड़ैक
अद्रेसँ झील बनल रहैए।

गामक माटिक जँ दशा एहेन
मिथिला राज केहेन हेतइ।

बाहरे-बाहरक सुसकारीसँ
गहुमनक बीख केना झड़तै।
विचार इमानक केकरा कहबै
खोलि देखू मातृकोष।
अपने-आप प्रश्न पुछि
विचार करू सम्हारि होश। ❑

बेरोजगारी

राँड़ कानए अहिवाती कानए
तैसंग बर-कुमारि कानए जेना।
रोजगार कानए बेरोजगार कानए
हिबडिब करैत सरकार कानए तेना।
बेरोजगारसँ देश भरल छै
बौस बिना कंगाल बनल छै।
तैबीच रोजगारे हेराएल
तमसगीर तमाशा देखि रहल छै।

सभ छी शुभचिन्तक देशेक
सभ विचारक संग नेता की।
मुसहर बीच मूस हेराएल
धीया-पुता काल्हि खेतै की?
दिशाहीन रोजगार बनल छै
रंग-बिरंग दुनियाँ बनल छै।
केतौ पेन्शनधारीक रोजगार
तँ केतौ करैबला पड़ल छै।

जाधैर दुनू दिशा मोड़ि
डोरीसँ नइ कसि गतानब।

सुतल सपना अधनीनामे
दिन-राति देखैत रहब।
पाँच हजारक नोकरीमे
मोबाइल, गाड़ी ओ चौक-चौराहा
खुशी-खुशीक जिनगी बना
गोधन दिन लिअ हुरियाहा। ❑

लीढ़ी पोखैर

सुदामा दीदीक खुनौल पोखैर
कुमोल बनि पड़ल अछि।
कियो मुइलही कियो लीढ़ी कहि
अपन आँखि मूनने अछि।

टटका नफ्फा सभ कियो देखए
घाटाक घाट देखबे ने करैए।
गामेक तँ छी सम्पैत पोखैर
एहेन विचार उठबे ने करैए।
जहिया खुनौलैन पोखैर दीदी
तइ दिन छल ओ देवघर।
तियागिते ऐ दुनियाँकेँ
बनि गेल ओ फुसियाहा घर।

कियो ने कलपरदार छै ओकर
तखन के विचार करत।
गामक सम्पैत बुझि-बुझि
उत्पादित सम्पैत बनौत
जाधैर प्रतियोगितामे बैसए
गाम-गाम तैयार नइ हएत।

ता धरि अहिना लीढ़ी पोखैर
नीकहो सभ बनैत जाएत।

चेतु, आबो चेतु, जे दिन बीतल
से दिन बीतल।
उठा आँखि आगू बढ़त
तखने पएब भविष्य-फल।
तखने पएब...। ❑

बकरी भेराड़ी

टुटिते नीन खुजैत भक्क
मनमे साँझुका बात जगल
विचारि नेने रही काल्हिए
काल्हि रोपब गाछ फलक।
टुटिते भक्क मन ठेलए लगल
शुभ काज विलम नहि।
मुदा हाथ लगबैसँ पहिने
अँटैक मन किछु ठमकल।

खेत अपन, खुरपी अपना
मुदा, बकरी भेराड़ी कहाँ अपना।
मने-मन विचार बिचैड़
केना पूर हएत सपना।
भैयाक मुहेँ सुनने छेलौं
भेराड़ी छी पुष्ट अहार।
गाछ-बिरीछ संग घा-घौस
सभकेँ दइए उपहार। ❑

महगी

दस सगे नितराइत विचार
दस सगा देखि डरि रहल छै।
एके गाम, परिवार भैयारी
भाए-बहिनसँ हटि रहल छै।
कियो बाजए धी बसाएब पुन
तँ कियो चेतबैत धी-भागिन
खेलो सभ अजगुत छिड़ियाएल
खेलाड़ी देखबए तोड़ि तान।

देखए पड़त, विचारए पड़त
एना होइए तँ केना भेल?
आजुक जे खाहिंस छै
ओ हएत तँ केना हएत?
अरबो टन अन्न माटि पड़ल छै।
करोड़ो हाथ बेकार पड़ल छै
हाथ-माटिकेँ भेँट कहाँ
सभकेँ सभ अनचिन्हार बनल छै।

किछु दबाएल माटिक तरमे
तँ किछु काटए जहल गोदाम।

मौगमेहरा पहरदार बनि
कठपुतरी नाच देखबैत ठाम-ठाम।
जे उन्नैस साए एक ईस्वी
मन धान तीन मन खेसारी।
रुपैआ बरबैर चलैत रहल
नजैर उठा देखू भैयारी।
नजैर उठा...। ❑

जरनबिछनी

जरनबिछनी, जिनगी बुझि
हथियार संग रणभूमि चलैए।
गाछी-बिरछी ओ बँसबिट्टी
ठहुरी-कड़ची बीछि-बीछि अनैए।
साँप-कीड़ाक डर कहाँ छै
वोन-झाड़ घुमैत रहैए।
काँच-सुखल बेड़ा-बेड़ा
सजि-सजि पथिया भरैए।

बिसैर गेल कहिया केतए
नुआ होइ-छै नाँगट बचाएब।
सिहकल, मसकल फटल मैल
चेफड़ी सटल इज्जत बँचबैत।
जहिना लोहिया ओढ़ि-ओढ़ि
जुग बितौलैन लोमस बाबा।
चोंचा खोंता सिर सजि तूँ
मुँह छिड़ियबै छै मकइक लाबा।

कनी सुन गै जरनबिछनी
नाओं-ठेकान बतौने जो..!

स्वतंत्र देशमे तहूँ बसै छैं
से कनी-मनी कहने जो।
तोरो देश स्वतंत्र भेलौ
आकि भेलौ स्वतंत्र पुरखा।
देवी-दुर्गा के सभ देखलकौ
से कनी कहने जो..! ❑

नव-फल

अहाँ बागमे हमहूँ बाबू
चुनि एक फल लगौने छी।
सुआद तँ नइ पौने छी
आशा नीकक लगौने छी।
छी नइ हमर बाग ओ बौआ
पैछला पीढ़ीक लगौल छिऐन।
एकाएकी ओगरबाहि करैत
बगवाड़ि करैत बाग धेने छिऐन।

हुनके सबहक लगौल ओ बौआ
बेरव-बुनियादि सेहो छिऐन
गम्हारि सीसो ओ ताड़-खजूर
खरही, खरहोरि सेहो छिऐन।

अपन कहाँ किछु कहलिऐ बाबू
युगक धरम किछु ने पड़ल?
पुरुखामे पौरुष दाबि
अपन किछु ने मोन पड़ल?
तोहर सवाल सुनि हृदैमे
गुदगुदीक संचार करैए।

तीन शक्ति चलए जेतए
परिवर्तन साकार करैए।
धर्म सनातन यएह कहबै छै
समय संग सटल चलए।
दुलड़ैत-मलड़ैत संग
झुमि-झुमि गबैत चलए।
बौआ, तोहूँ तँ अपन किछु
दिन-देखार पथार पसारह।
दबले-दाबल केते दबाएल
रंगमंचपर खेल देखाबह।
तेसरा रोपलैन आम रघुनी भाय
घौंदा-छौंदे फड़लैन ऐबेर।
ओकरे एकटा आँठी आनि
खाली देखि रोपलौं ऐबेर। ❑

पू-भर

माए गे, सभ कोइ पू-भर जाइ छै
संगी संग हमहूँ जेबै।
गामक दशा देखिते छीही
ऐठाम रहने की खेबै?
बौआ हौ, हम की कहबह
धीगर-पुतगर तोहूँ भेलह।
सुख-दुख तँ देखिते छहक
आब की कोनो नेना छह।
एकटा बात बता दाए
करए जेबहक कोन काज?
से काज जँ एतै जगेबह
किए जेबह अनका राज।
भ्रम-जालमे सभ फँसल, माए
के केकरासँ कम जनैए।
धन छोड़ि धनवान बनल सभ
अपन बात बुझबे ने करैए।
पू-भर केतए जेबह तूँ
से कनीए हमरो कहि दाए।
मन हएत तँ पत्रो पठेबह
नाओं-ठेकान दिहह पठाए। ❑

चौरीक धनकटनी

कातिक-अगहनक शीत ओस
पाबि पूस गेल पलाए।
दसतारक सेहो चलैए
तरे-तर जाड़ गेल जुआए।
ऊपर खेतक धान कटि-कटि
गहुमक बागु चलए लगल।
नार-पात समटैसँ लऽ कऽ
दौन-दोगौन हुअ लगल।
राति-दिनक सीमा तोड़ि
जी-जानसँ सभ भीड़ल।
जेते-काम तेते दाम
हँसी-खुशी भेटए लगल।
गहुमो बागु, धानो दौन भेल
टालक पेनी सेहो छनल।
टीनक मुँह काटि-काटि
उसनियाक बरतन बनल।
एक्के धान उसनलापर
उसना-अरबाक खाढ़ बनैए।
चौरीक कटनी पछुआ पाछू।
पानिक बीच धान सड़ैए।

सी-सी सिहकी पछबा धेलक
पूर्वो भांज पुरए लगल।
सुगम-सगुण पाबि-पाबि
शीतलहर चलए लगल।
अकाससँ पताल धरि
कोणे-सान्हिये ठंढ पकड़लक।
ठरल पानि ठाढ़ भऽ तपस्वी
सीस धानक हियबए लगल।
एक तँ सिल्लीक चाभल
दोसर पानि सेहो ठराएल।
सड़ि-सड़ि सीस घार खसौने
पानिक तर सेहो नुकाएल।
पड़ल छगुन्ता ठाढ़ तपस्वी
हँसुआ नेने पानिमे ठाढ़।
छोड़ि देब कायरता होएत
लगले केना मानि लेब हारि।
जाबे प्राण बँचल अछि
ताबे केना पीठ देखाएब।
थोड़ो-थाड़ जँ आशा औतै
आशावान जरूर कहाएब।
आशावान जरूर...। ❑

किसान

अपन दुख-दरद भाय
जाधैर अपने नइ बुझब।
ता धरि केना पाबि सकै छी
नीक भविष्यक नीक सोचब।
निच्चाँ-ऊपर सभ बजैए
किसानेक देश भारत छी
कटि-मरि किसाने सभ
अँग्रेजोकेँ भगौने छी।
जरि-उजैर केते गाम
केते लोक प्राण चढ़ौलक
पैंसैठ बर्खक आजादी की
पेटोक दुख मेटोलक।
जहिना आजादीसँ पहिने
चुसलक खून राजा-रजवार।
तहिना तँ आइयो होइए
चुसैए देशी-विदेशी करखन्नादार।

चिड़ै सभ जहिना गाछक ऊपर
खोंता बनबैए अपने लोले।
तहिना ने अपनो भऽ सकत

लुइर-बुइध अपने बले।
निर्णायक दौड़ आबि रहल
अछि निर्णायक मोड़।
मोड़ मोड़ि घुमाएब नइ जाधैर
पएब केना थोड़ो-थोड़।
स्वतंत्र देशक स्वतंत्र जनकेँ
गहि एकरा धड़ए पड़त।
यएह छी सोचै-विचारैक
जीबैले लड़ए पड़त।
जीबैले लड़ए...। ❑

टुटैत जिनगी

टुटैत जिनगीक बेथा
घुमि पाछू देखए पड़त।
सैयौ नइ हजारो बर्ख नै
जड़िएसँ देखए पड़त।
पाँच हजार बर्खक पुराण
हँसि-हँसि बाजि रहल अछि।
सुर-असुर, दानव-देवताक
ऐतिहासिक गाथा सुना रहल अछि।
लगभग पौने दू साए बर्ख पहिने
अँग्रेज आबि आसन जमौलक।
जेकरा भगिते ऐठामक
जन-गण आजादीक साँस लेलक।
मुदा एतबे नहि, कने आगू चलू।
हजार बर्ख की कहैए।
चारू दिस भजारि-भजारि, तेकरा
पुछियौ विवेकसँ निर्णय की करैए।
स्वर्णिम इतिहासक स्वर्णकाल
ओझुके भारत छल तहियो।
निचोड़ि-निचोड़ि, तर्क-वितर्क
निर्णय निरमाबए पड़त आइयो।
निर्णय निरमाबए...। ❑

कविता

नव पथक अनुकूल पथिककेँ
सही सवारी सुपथ-पथ चाही।
तहिना खुशी खुदखुदबैले
मुस्की सजल शब्द कविता चाही।
उपयोगी नव-नव वस्तुक
जोड़ि-जाड़ि छिहलैत डगर चाही।
हेराएल रसिक प्रेमी-ले
बेराएल भाव कविता चाही।
बेराएल भाव तहिए सजैत
जहिए भेटैत छिड़ियाएल भंडार।
चुनि-चुनि चुनिया चुनैबिते
नुकाएल पबैत शब्द-संसार।

गढ़ि सदए चमचमाइत शब्द
सिरजए अलंकार ओ छन्द।
चाहे केतबो केहनो हवा सिहकै
चलिते रहैत मुस्काइत मन्द।
मन्थर गतिए चलि मोहैन
परखए सदए दुध ओ पानि।
सिर ऊपर आकि नीच-मध्य

देखि पकैड़ सम्हारि-वाणि।
नव पथक अनुकूल पथिककेँ
सही सवारी सुपथ-पथ चाही।
तहिना खुशी खुदखुदबैले
मुस्की सजल शब्द कविता चाही। ❑

बुड़िबकी

धरिया धारण केने माए
जाइ छेलौं स्कूल बाट।
बाटेमे रोकि काका
बुड़िबक कहि लगौलैन टाट।
बौआ, तोहर काका दिअर हेता
ओ देखलैन संग मोर।
हमरा देखि तोरा कहलखुन
दुखी नइ हुअ थोड़ो-थोड़।
काकाकेँ छोड़ि दइ छिऐन, माए
तोंही तँ फडिया दे?
चुट्टी धार पतियानी सदृश
केना चलब सेहो सुढ़िया दे
बुड़िबकक माने अनेक
एक तोहर एक माए-बापक
तोहर जे छिअ, कहै छिअ
कान पकड़िहह थोड़बो-थोड़।

एके काज दोहरी-तेहरी
जेहेन जे से तेहेन करैए।
हलुक बना जे करैए।

काबिलो तँ वएह कहबैए।
बुड़िबक बुझि सवाल केलियौ
से कहाँ बुझौलें माए
आबो कनी बुझा-बुझा
सुझा-समझा दे माए
सुझा-समझा दे माए। ❑

गाछी भुताह

बीआ उगि अँकुरि-अँकुरि
बढ़ैत बनि बनल गाछ।
पुरुष संग पौरुष पाबि
बनौल जिनगीक आस।

सोन्हि सिर सन्हिया धरतीमे
उठा पएर सुन-सान अकास।
संगी सजि चलि दुओ संगे
बैस गेल धरती ओ अकास।

डेगे-डेगे डगर निरमा
नइ छै जेकर ओर-छोर।
तृप्त चित्त बैस चितासन
मढ़ै-गढ़ै छै साँझ-भोर।

घाट पहुँच देखि तुलसी
अनन्त सरोवर झील।
उमैर-घुमैर गाबए वसन्त
हुलैस-हुलैस भऽ तुलि।

अश्रु आंसु सजि अनन्त कमल
लगबए भोम्हरा छाती

विष-अमृत सेज सजि
प्रेम पसाइर दिन-राती।

बाँसक घर देखि भोम्हरा
भेम्हैर-भोम्हैर बनौलक घर।
शान्त-चित्त वास करैए
नइ छै मिसियो भरि डर।

अपन सुख सिरजैले
उजाड़ि-उजाड़ि दोसरकेँ
वंश उजाड़न भेल बनौनिहार
क्षण-पल मेटबए दोसराकेँ।

हुच्ची खसि हिआ हारि
लगल तियागए जान-परान
एका-एकी मेटए लागल
हँसैत-कनैत खनदान

पावनक परसाद पाबए
हँसि-हँसि आबए लागल भूत
पाबि परसाद पौरुख जगमगा
बनि बदैल गेल यमदूत।

सभ मिलि यमदूत निरमा
जअ-तिल चढ़बए यमराज

साटि-साटि सहे-सहे
निआइ निआइक बनल धर्मराज।

अकास-पतालक बीच रचि
जिनगी-मृत्युक संसार
स्वर्ग-नरकक बीच बाँटि
लीला शुरु भेल अपरम्पार।

नि:सहाय निरीह धरतीकेँ
बनौल भोगक चास
तामि-कोरि परती-पराँत
ऊँचगर बनौल डीह-बास।

जामुन चढ़ि यमदूत हँसए
बना बास देवी फुलवाड़ी
जीन पसैर धरती चुमए
भूत लपैक लेलक बँसबाड़ी।

देखि दशा गाछी-बिरछीक
लगौनिहार भऽ गेल बताह
होइबला कहाँ होइ छै
कानि-कुहैर भरै छै आह।

अबोध कुहैर बोध कुहैर
कुहैर-कुहैर भरै छै आह

सिहैर-सिहैर सिसकए विवेक
बनि गेल गाछी भुताह।

भूतक डर केकरा ने होइ छै
बुढ़ हुअ आकि जुआन
मुदा भूत तँ भूते छी
सदिखन राखू अपन धियान। ❑

वोनक आगि

गाछ-बिरीछक रग्गड़सँ
लुत्ती छिटकै छै वनमे।
सुखल पात ठहुरी पकैड़
पसरै छै सघन वनमे।
धधड़ा धधकैसँ पहिने
करिया धुआँ पसरे छै।
लगैत आँखि अश्रु करुआइते
जीव-जन्तु पड़ाइ छै।
आगिक डर केकरा ने होइ छै
चाहे बाघ हुए कि हाथी

मुदा,
धीरजसँ जे सहैए...
सएह कहै छी यौ भाय साथी।
सएह कहै छी...। ❑

बीतल बर्खक विदाइ

अन्तिम सत्कार सुनू शिकारी
अन्तिम दिन कहै छी।
अन्तिम बात सुना-सुना
अन्तिम सत्कार करै छी।

हँसैत रहू सदैत अहाँ
हमरो तँ जीबए दिअ।
सभ किछु तँ लैए लेलौं
एतबो तँ बाजए दिअ।

नोर पीब हृदय अहाँक
शीतल सदैत रहैए।
मनक ताप झहैर-झहैर
सगतैर तँ कहैए...। ❑

संगी

संगे-संग एलौं
संगिया मरि गेल
हम भुतिआइ छी।

संगे अबैत मिलि
ठेंसिया गेलौं बाट
संगिया छुटि गेल।
हम भुतिआइ छी।

अचेत भऽ पूब मुहेँ
पथराएल नैन निष्प्राण
बाटे लसिया गेल।
हम भुतिआइ घाट।

आगू-सँ-पाछू, नोचि
नोचि खाइले प्राण
तखन अहीं कहू यौ भाय
केना कऽ हेतइ त्राण।
कोइ भुतिया बना बाट
तँ कोइ बहैट-बहटैए

कतबाहि पकैड़ कोइ
शान अपन देखबैए।
असगरे वौआइ छी
हम भुतिआइ छी।

कोइ खुनि खानि निरमा
नव बाट-घाट बनबैए
तँ कोइ घाटे वौआएत।
घटवार कोइ कहबैए।

पिछैड़-पिछैड़ खसि-खसि
लतखुर्दन बनल छी
चारू कात निहारि-निहारि
टुक-टुक देखै छी
चौदहो भुवनक बाट
चलैए चौदहो दिशा।
कोन बाट केना पकड़ब
बाटे विलाइ छी
संगिया मरि गेल
हम भुतिआइ छी। ❑

बेथा

पुछत के केकरा यौ भाय
अपने बेथे सभ बेथाएल।
घसा-घसा चानी बनि टलहा
चीन-पहचीन सभ हेराएल।
कोन कष्ट केकरा पकड़ने
देखनिहारो वौआएल-ए।
देखतो देखि ने पेब पबैए
देखनिहारे भँसिआइ-ए।

रंग-बिरंगक चश्म दृष्टि
मने-मने हेराएल-ए।
दिअ पड़त दृष्टि धरती
विचार मन छिड़ियाएल-ए।
तीन-दिशा तीनू चलए।
आत्मिक भौतिक ओ देवीक
जगह पाबि तीनू खेलैए।
तीनू अछि अपने लेविक।

एक खेलैए तन-मन भीतर
दोसर करए तेज परहार

तेसर तीनू बाट घेरने
रोकि-रोकि बिलहए उपहार।
तत्त्व कहैत मुँह खोलि-खोलि
तीनूक तीनू छी तकरार।
खोलि आँखि अगात देखि
फुलाएत अभिमन्यु भकरार।

कहाँ अछि कठिन बाट जिनगीक
चिक्कन चालि चलैत चलू।
जिनगी तँ पानिक बुलबुल्ला
परेख-परेख छाती धरू।
परेख-परेख...। ❑

धब्बा

रंग-रंगक धबैत धब्बा
दोस्ती करैत संग धरैए
उकनल सिर गाछ चढ़ि
रीति-नीति बिसरैए।
सुखि पात पतझड़ पाबि
पथार पसैर धरतीपर।
नग्न–बेनग्न बनि वृक्ष
नोर टघारए करनीपर।

दर्शनक सभ महिमा गाबए
जहिना देश तहिना विदेश।
दिशा विहीन भऽ भऽ
कोन गीत गौतै सुदेश।
धन जीवन आकि जीवन धन
पैसि गंगा देखए पड़ै छै।
गंगा तँ गंगा भेली
गंग-मन भरए पड़ै छै।

अपना-ले अपने आँखिये
गंगाजल पीबए पड़ै छै।

विदुषी आकि ऋृषिका बनि
मंत्र-वेद रचए पड़ै छै।
गुणक धुन संग नचिते
गुणक धन कहबै छै
गुणक धन मन-मना
दिशा बोध करबै छै।
पबिते बोध दिशाक
दृश्य-दिशा देखबै छै।
दशो दिशा देखा-देखा
सिर चढ़ि धब्बा देखबै छै।
सिर चढ़ि...। ❑

पितृपक्षक भोज

अमावास्या आसिन केर
बितते भोजक लगैत ढबाहि।
आन-आन ओरियानक संग
महाजनी चाउरक लगैत सवाइ।

गाम-गामक महाजनोक
रंग-बिरंगक हुकुम चलै छै।
केतौ सवाइ तँ केतौ
डेरही, पौन-दोबर सेहो चलै छै।
जेकर लाठी तेकर भैंस
खाली ई खिस्से नइ छी।
पइस नहाएब जखन पोखैर
तखन बुझब अपने ने किछु छी।

मुदा गुन भेल, भाय हमरा
जाति-जातिक रग्गड़ मचल।
काटि-छाँटि एकबाहि केलक
मनमे खुशीक तूफान मचल।
जातियो तँ जातिए छी
दिन-राति रग्गड़ करैत रहैए।

समय पाबि जहिना सिंघार
खुशी-खुशी अपने झड़ैए।

गाममे जाति असकर
असकर अछि दियादी।
बिनु भोजे उद्धार सभ कियो
बाबा, काका, भैया दादी।
अपने फुरने जहिना सभ
हँसि-हँसि नचबो करैए।
तहिना ने भाय हमहूँ
हँसि-कानि तोरा कहैए। ❑

ठनका

कहाँ बुझि पेलौं अखन धरि
तड़कैत ठनकाक मिरगी।
आगि-पानि दुनूक बीच
पकैड़-पकैड़ चभलक जिनगी।
सच्चे कहल जाए यौ भैया
हाथ चढ़ा सिर पकरू।
साहोर-साहोरक, स-हरि स-हरि
कहै छी ठनका उकड़ू।
कहै छी ठनका उकड़ू।

कहाँ छै ठनका उकड़ू
रंग गुलाबी लाल देखियौ।
लग खसैक ठनकाक आगम
आँखि-कान आबो बँचबियौ।
नइ तँ बाट भेटत दुर्गम।
अचेत-अबूझ बिनु रहितो
ठन-ठन ठनक कहैए
कहाँ जेठक धीपल रौद
आकि शीतलहर जाड़ खसैए।
आकि शीतलहर...।

खाली-खाली अकासमे
एहेन ठनका बनै केतए?
अनचोकेमे उठिते उठि
एते शक्ति अनै केतए?
गैस-तरल, कि तरल ठोस
आँखि मिचौनी खेल करैए।
उड़ि-उड़ि अकास चढ़ि
आगिक अँगोर बनैत रहैए।
आगिक अँगोर...।

वएह अँगोराक शक्ति पाबि
उसरन-बिसरन दुनू बनैए।
सुतल मन आशा जगा
पानि-पाथरक खेल देखैए।
सोलह कला सेज सजिते
जिन्दादिलीक वसन्त अबै छै।
मंजिल दूर कोनो नइ छै
दुनियाँक नक्शा एहने बनल छै।
दुनियाँक नक्शा...।

चीन्ह-पहचीन्ह बाट ताकि
नापल डेग गनल छै।
बनि बटोही बाट घरू
भरल-पूरल संसार पड़ल छै।

रस्ते-पेरे बटखरचा भेटतै
संगबेक भरमार पड़ल छै।
जखने संगबे तखने लड़बे
संगबे-लड़बे संग चलै छै।
संगबे-लड़बे...। ❑

झपासा

पहिले-पहिल जिनगीमे
गिरहकट भाइक बुझलौं झपासा।
एहेन मुँहचुरू बनब
मनमे नइ उठल तेहेन आशा।
सभ दिन सुधबा-बुधबा रहलौं
छल-प्रपंचक भाँज नइ बुझलौं।
बाबू वचनक निमर्जना
निश्चल मने करैत एलौं।

मुहसँ कहियो गारि नइ निकलल
फलो नीके भेटैत रहल।
ओना सुनने छेलौं गिरहकटक
मेलाक बात मोन पड़ल।
गिरहकट भाइक चालि सभ बुझैए
हमहींटा बिनु बुझल छेलौं।
नइ बुझि पेलौं हुनक झपासा
ओंघरा-पोंघरा खाधिमे खसलौं।
बेटा मुड़नमे अगुआ कऽ
नौत-हकार दिअ पठौल।

किरदानी तेहेन ने केलैन
अगुआक अगुआ फल पौल।

अहूँकेँ कहै छी भाय
झपासासँ सात लग्गा हटल रहब।
गिरहकट सबहक बातसँ
सदैत अपनाकेँ बँचैत रहब।
मुदा लगले मन कहै छी,
भोगले-भोग कहै छी।
रूप बदैल रतिचर-दिवाकरक
भूप-रूप देखै छी
भूप-रूप देखै छी। ❑

शिवचरन

सोलह साल पोहुलका शिवचरना
शिवचरन बनि बिरजैए।
जे कहियो गामक मैल छलए
होशगर किसान कहबैए।
भूमकमक किछु बर्ख बीता
शिवचरना छोड़लक गाम अपन।
कियो कहए छोड़लक
कियो छोड़ौलक सेहो कहै
नइ बजैए कथा अपन।
खसैत-खसैत, खसैत शिवचरना
गामक पतित कहबए लगल।
छाती जरखन काज नइ केलकै
गाम छोड़ि, नेपलिया बाट चढ़ल।

आन देश आन मुलूकमे
बिनु जगजगार लोक मनुखे रहैए।
लूरि-मुँह जेहेन रहए छै
तेहने शक्लक बाट धरैए।
विराटनगरसँ कोस भरि उत्तर
एक किसान एतै पहुँच शिवचरना।
तरकारीक खेतीक वृत्त बेवसाय

बीघा भरि खेत लेलक भरना।
घराड़ीक पाइ रहबे करै
खेतेमे चापाकल धसौलक।
दु-परानीक खोपड़ी बना
मेहनतक आसन जमौलक।
साल भरि बाद नोकर रखि
मेहनतसँ खेतो दोहरौलक।
साले-साल उठैत-उठैत
गिरहस्त अपनाकेँ पौलक।
मनमे उठलै देस-कोस
गाम-घर ओ सर-समाज।
बेचि-बिकीन सभ किछु नेपालक
आबि गेल अपना समाज।
संजोगो नीक भेटलै
दस बीघाक एक पार्टी भेटलै।
एकेठाम दसो बीघा कीनि
घर-घराड़ी सभ किछु भेटलै।

शिवचरनाक चालि वानि
गाम छोड़ा भगौलक
बदैलते चालि-वानि
शिवचरन नाम पौलक
शिवचरन नाम पौलक। ❑

चौरचनक छाँछी

चलैत चाक देखि कुम्हैन
तिरछिया तीर छोड़लैन तानि।
कोन लोभ लटकल अहाँ छी
बगुला, पाछू दौगैत जानि।
प्रीतम प्रीत पाबि कुम्हार
बिहुसि बाजल, छाती खोलि तानि।
सभ दिनसँ करैत रहल छी
तेकरा केना छोड़ब जानि।
भादो सन उकरू मासमे
विधाताक चीक-चाक जानि।
पानि-बुन्नीक ठेकान कोनो ने
अनेरे फज्झैत सुनब जानि।
जे फज्झति करए अहाँकेँ
तेकरा पुछब अपन किरदानी।
लोहा-लक्कड़क दूध पौर-पौर
गाए-महींसक करैत बदनामी।
छोड़ि दिअ सभ गर-गिरहत
बेशर्म सभ बनल जाइए।
देवियो-देवताकेँ ठकि-फुसिया
छाती तानि-तानि चलैए। ❑

भरदुतिया

आइये ने भरदुतिया छी माए
पिरही करवनी धुअए जाएब।
साल भरि माटिक लेढ़ाएल
चिक्कन धोय करवनी सजाएब।
बिनु सुखने लिखिया केना हेतै
बिनु लिखिये आसन केना बनतै।
भाए-बहिनक सगुनिया पाबैन
बिनु निअम-निष्ठे केना चलतै?
बिनु निअम-निष्ठे...।

पुरैन तँ पाड़ले अछि बेटी
कटहरक रंग छै सटल।
मलि-मलि माटि धोइ दिहक
सुखिते चमचमाए लगत।

पानो-मखानक ओरियान
अखन धरि पछुएने छह।
पाबैनक ओरियान करह तूँ
अँगना घर सम्हारै छी।
बाल-बोध बुझि बेपारी
हमरा तँ ठकिए लेत।

पाइयो बेसी-बेसी लऽ लऽ
चीजो तँ दबके दऽ देत।
ई सभ बात सोचए कियो
भरल-पूरल पाबैनमे।
राम-धाम सभ सहि
भाइक हाथ पुजैमे।

भाए-बहिन जँ संग मिलि
एक-दोसरक हाथ पूजत।
दुनियाँमे बाँकी की रहतै
जे सहोदरकेँ नहि भेटत।
जे सहोदरकेँ नहि भेटत। ❑

फुसि

एहनो फुसि बजै छी
जइ ढेरीपर बैसल-बैसल
ओ कहै छी, किछु ने अछि
अकर्म-विकर्मक बात बिनु
मुँह उघाड़र बजै छी
एहनो फुसि बजै छी।

लेश मात्र जे अछि नै
तेकरा ढेर बुझै छी
ब्रह्मलोक, शूरलोक, देवलोकक
सदैत बात बजै छी
एहनो फुसि बजै छी। ❑

चिक्कैन माटि

सभ कोइ जाइ छै माटि आनए माए
हमहूँ जाएब अनैले।
चारिमे दिन दिआरी पाबैन
घर-ओसार छछाड़ैले।
अखन ते बच्चा छैं बेटी
केना कहबौ माटि माथ उठबैले
मटिखोभा महारक ऊपर
केना कहबौ तइ चढ़ैले।

जेना-जेना सभ करतै माए
तेना-तेना हमहूँ करबै।
संगे जेबै, संगे एबै
पथिया भरि कऽ लौबै माए।
कहले तँ बड़ सुन्नर बेटी
नइ बुझबिही माटिक किरदानी।
जे माटि चमकबै माटिकेँ।
धसना खसि मारै जिनगानी।
दोसर-तेसर काज उताहुल
नइ जा हएत आइ हमरा।
संगे-संग काल्हि चलिहेँ बेटी
तोरे आशा ने अछि हमरा। ❑

झारू-बाढ़ैन

दसे दिन दिआरीकेँ माए
अँगना-घर कहिया करबिही।
झोल-झाल लटकल सौंसे
चार-देवाल कहिया झाड़बिही।

वएह ओरियान करै छी बेटी
सीखि ले तोरो काज देतौ।
देखिये-देख, सीखिये सीख
ऐगला दिन काज हेतौ।
नारिकेलक छाजा चीड़ि-चीड़ि
किल्ली दऽ झारू बनाएब।
निछा-निछा राड़ी-डबहारी
मुड़ी-छोपि बाढ़ैन बनाएब।
आब कि केतौ चौरकाँटु भेटै छै
बाढ़ि आबि सभटा उपटौलक।
केतौ-केतौ जौं बँचलो छै
तेकरो तँ बकरीए निघटौलक।

झारू-बाढ़ैन मठौठ केना पौत
तखन केना झोल झड़तौ।

से जँ नइ झड़लौं माए
तँ लटैक-लटैक घर खसतौ।

से तँ बेस कहलें बेटी
आब कि केतौ राहैड़ होइए।
जहियासँ राहैड़ उपटल
लाड़ैनो बनबैले खगैए।
जेना-जेना समय ससरै छै
तेना-तेना ससरैत चल।
महक जेना हवा पसरै छै
तेना-तेना पसरैत चल।
बाँसक छिपाठी टोनि-टोनि
झारू-बढ़ैन बान्हि देब।
दोगे-सान्हिये, कोने-कानिए
चिक्कन-चुनमुन झाड़ि बना देब।
चिक्कन-चुनमुन झाड़ि बना देब। ❑

मेवाक फल

ब्रह्म मुहूर्त भोरहरबामे
डगरीक डगर बजल भरि गाम।
जैहह दरिदरा अबिहह लक्ष्मी
मंत्र पजड़ल मनक धाम।
सूप बजौने ऊँट भगै छै
नानी-नाना कहने छैथ।
सबुरे गाछ मेवा फड़ै बेटी
झुनकुटही दादी कहने छैथ।
सवुरक गाछ केहेन छै माए
कनी-मनी हमरो देखा दे।
किए वोन-झाड़ लगाएब
फुलवाड़ीक लूरि बता दे।
अखन अहाँ बाल-बोध छी
फूलक गुण-अवगुण सीखू।
गुणे-अवगुन फूलक गुण छै
बुझै-लगबैक लूरि सीखू।
सवुर शब्देटा सँ नइ बौआ
विशाल-वृक्ष सेहो होइ छै।
रंग-रंगक फूल-फड़ संग
मेवोक फल लगै छै।
मेवोक फल लगै छै। ❑

चपरासी भाय

पाबि पद चपरासी केर
खुशी हँसी बनि उठल परिवार।
धरती छोड़ि अकास छिटकए
सुर्ज-चान संग करत वास।
आइ धड़ि खिलचल घर
समाजक विलटल परिवार
बसैत मनुख मनुखेक संग
चाहे जेहेन हो परिवार।

ओसारेक एस्टुलपर
भेटल काज भाय चपरासीक
पद गढ़ि अँग ऑफिसक
रूप बनौलक दरवारिक।
नाचि मन गाबए लगल
खिखिया ताल देखबए लगल।
आँखि मारि इशारा करैत
सुर-ताल झुमए लगल।
रोब कहाँ रूआब कहाँ
गनल दिन कुरसीक छी।

लेखा-जोखा सबहक होइ छै
निच्चाँ-ऊपर चाहे कुरसी।

निचला कुरसी करवनो कुदि
तोड़ि-फाड़ि धरतीपर पटकए
बतिया ऊपरका चीड़ि-चाड़ि
दोख मढ़ि-मढ़ि फाँस लगबए। ❑

नोत

भोरे आबि लालभाय देलैन
नोत कोजगराक घरजाना।
नाओं कहि फुटा कऽ कहलैन
नइ भेल बाबू मन-माना।
परिवार तँ परिवार होइ छै
फुटा नोत देब अनुचित।
बिनु विचार केने ता धरि
केना कहब एकरा उचित।
बेस पुछलह बौआ तूँ
तँए तोरा कहै छिअह।
वृद्धा पेंशन दरखासक तारीक
दुनू केना निमाहब आइ।
तखन कि करबै बाबू
रस्ता तँ अहीं देखाएब!
केते महत केकर छै
छी कोन बड़ भारी खाएब।
एकजना बना परिवारमे
धुरीकेँ नेने पकैड़।
पेट भरि खाइ खातिर
डारि-पात दइए छकैर।

तेतबे नइ बौआ, आरो सुनह!
बाल-बोध घरक भेलह।
तोरा छोड़ि खाएब उचित
तोरो तँ जाइले केना कहबह।

जखन अहाँकेँ नोत पड़त
खतियान सेहो बनबे करतै।
खतियाने ने खत्ती दऽ दऽ
आड़ि-धूर बनबैत रहैत।

कहलह तँ बेस बौआ
मुदा तोहूँ बन्हले छह।
ने उपनैन ने भेलह बिआह
तोहर कोन मदीए छह। ❑

लटुआ

लहैकते आगि मनमे
लटुआ-लटुआ मन लटए लगैत।
देख, आशाक अवरूद्ध बाट
मुरैझ-मुरैझ टगए लगैत।
रंग-बिरंगक आगि पजैर
पकैड़ मन झरकाबए लगैए।
तड़ैप-तड़ैप, छटपटा-छटपटा
धरती फाड़ि निकलए लगैए।
पटुहा भेल नगर (गाम) देखि
बिलैग बिलगा गुणए लगैए।
कियो पीड़ित अन्न-वस्त्र बिनु
कियो अवासक आस करैए।
कियो मनुखक जिनगी पाबए
ज्योति पबैले कियो मुँह बनैए।
हरा गेल आकि पड़ा गेल
बुझा दिअ हमरो यौ भाय
लुटा गेल आकि छीना गेल
सेहो कनी दिअ बुझाए
सभ चाहए सुखसँ जीअब
माएक सजौल आँगनमे।

बेचैनीसँ चैन नै पाबए
चैन नहि पाबए बेचैन मनमे।

कहियो बल, कहियो सुसकारी
आइ धरिक इतिहास कहै छै।
एकैसम सदीक मशीनी मनुख
तेकरा-ले की सभ कहै छै। ❑

एकैसम सदीक देश

पैघ आकांक्षाक सदी एकैसम
उत्तरार्द्ध बीसमीए छूलक मन।
नव-नव लूरि-बुधिये बले
सुख-समृद्धिसँ भरतै तन।

रंग-बिरंगक रूप सजल छै
दुनियाँक आजुक रंग
आगू भऽ कोनो दौगै छै
कोनो पाछू रगड़ै छै तन।

पहाड़-पहाड़ी, पठार बीच
नदी-पोखैर, झील जहिना।
गढ़ल-बनल देश अपन
आदिवासीसँ उद्योगपति तहिना।

कियो कलकलाइत पेट अन्न-ले।
तँ कियो ललाइत रैन-बास-ले।
कियो भनभनाइत पुष्ट देह-ले।
कियो चिचिआइत मुँह बोल-ले।

चित्र-विचित्र बनल छै देशाक
देखि सुनि, बुझि विचार करू।

सोचि-सोचि, विचारि-विचारि
एकरंग तसवीर सजू।

एक दिस सिक्किम, मिजोरम
नागालैंड ओ मणिपुर।
दोसर लेह-लद्दाक देखि
कनैत-कुहरैत जेसलमेर।

समुद्र ऊपर मुम्बै हँसै छै
भोगक भंडार सजल छै।
पाबि-पाबि हिलकोर समुद्रक
स्वर्गक संसार बनल छै।

उठैत प्रश्न अछि एतए?
मुम्बैए, महान भारत छिऐ
आकि अरूणाचल, झारखंडो
भारते छिऐ, भारते छिऐ?

आगू देखैसँ पहिने
उनैट पाछुओ देखए पड़त।
जेकरा कलपलदार बुझै छी
संहारक बनि चलैत रहत।

एकैसम सदी पहुँचलोपर
नर-संहार एहेन केना?

की एहने सुख-समृद्धि लेल
मड़चड़ बनल, आवास जेना।

जएह सर्जक बनि ठाढ़ होइए
वएह विध्वंसक बनि पड़ैए।
सुख-समृद्धिक रंगमंचपर
दरिद्रा-दुख नाच करैए।

जेकरा बले नाच करब
बामा-दहिना भौक मारैए
आँखि-मिचौनी खेल पसाइर
अपन पीठ अपने ठोकैए।
अपन पीठ... । ❑

मधुमाछी

पुष्प रस पीब मधुमाछी
मधुर चालि चलए मधुमास।
मोहि-मोहि रस बना मधु
बिलहए उपकरणक आश।

माछी रहितो तान मारि-मारि
गाबैए जिनगीकेर गीत
वायु सदृश गन्ध पसाइर
बनैए सबहक हीत।

डंक रहितो डंकिनी नै
जोगा मधु मधुरानी।
सबहक सिनेह पाबि राति-दिन
महतानि बनि कहबए रानी।

महलक बीच संग-संग
बाँटि काज चलबए दरबार।
जे जेहेन से तेहेन करि
पबैत स-मान परिवार।

उपैत धन जोगा-जोगा
महल बीच सजबए रानी।

सबहक सभ छी सभ छी एक
मुस्की दऽ-दऽ सुनबए रानी।

कियो उपैत, करैत कियो रक्षा
कियो पसारए परिवार।
एक सूत्र संचालित भऽ
हँसैत-बजैत बारम्बार।

अजगुत मोहैन मन सजि-सजि
सिरजैए अपन परिवार।
हेराएल-ढेराएल संग आनि
नित सजबए राज-दरबार।

तियाग-तपस्या बीछि-बीछि
जोगबए मान-सम्मान।
जे लेलौं से देने जाइ छी
नै कहब कियो बेइमान।

की लए एलौं की लऽ जाएब
जानए जागल नैनि।
घर नै सजने बनबै केना
सजल घरक गिरथानि

आबो सुनू, सुनू आबो
छाती फाड़ि कहै छी।

अपने केलहा छी अधिकारी
सभदिनसँ सुनै छी।

पौरुष पाबि पूजू विवेक
लाज जेकर जेबर छी।
डेगे-डेग सम बना चालि
दिन-राति सजबै छी।

जे जे छी से सएह छी
परखू अपन-अपन सीमा।
केकरो मनमे ई नै उठए
भसिया गेल बालुक सीमा।

कालक टुकड़ी सभकेँ भेटल
अपन-अपन छी रक्षक।
कलंकक मोटरी बान्हि जुनि
हँसाउ नाओं बनि भक्षक।

देव केतए दानव अछि केतए
दुनियाँक सभ लीला छै।
बेमत भऽ इन्द्रक घोड़ा
दानव देव बनल छै। ❑

जुआनी

समय संग चढ़ैत जुआनी
सुति-जागि चलैत रहै छै।
नट-नटीक रंगमंच गढ़ि
घर-अँगना नचैत रहै छै।

चैत चित्त चढ़िते चढ़ैत
योग-वियोग बीच मरड़ै छै।
लहलहाइत, फन-फन फनैत
दन-दनाइत तड़पैत रहै छै।

कात-करोट देखि-देखि
सोल्हो सिंगार सजबै छै।
योगी-वियोगी बनि-बनि
राग-तान, सुर मिलबै छै।

हपैत हवा थर्ड़ाएल ज्योति बीच
वेदनक वाण बेथित करै छै।
तन्नुक तन अधखिल्लू मन
टुकड़ी-पुरजा भऽ उड़ै छै।

शीतल समीर सिहैक-सिहैक
कलैप-कलैप कहै छै।

हँसि-हँसि कानि-कानि
चहकल विवेक चहैक कहै छै।

कड़ैक जुआनी झड़ैक-झड़ैक
हिअबए राह जिनगी केर
हारल जिनगी थाकल मन
बाट बनबै छै जिनगानी केर। ❑

तरंग

सबतैर जगबए प्रेम एकचित्त
दोसर सदैत विवाद करए
एमहर-ओमहर छोड़ि-छाड़ि
बीचका बाट पकैड़ रहए।
रंग-रूप, चेहरा अनेक
चेतन-चित्त तँ एक रहैत।
मुदा वृत्तिक किरदानीसँ
सदिखन तँ उगैत-डुमैत।
सत् बनि करवनो राज-बिराजए
रज बनि-बनि शासन करए
धरिते धारणि तम तम-तमा
झहैर-झहैर फुनगीसँ गिरए।
खेलक खेल काल सिरजैए
अपनो तँ खेले बनैए
कहाँ रवि पाबए दिन-राति
गतिएकेँ मतियो बदलैए।
सृष्टिक तँ खेले विचित्र
सुख-दुख संग दिन-राति चलए
खेलए जेहेन खेल खेलाड़ी
ओहने ओ खेलौना पबैए।

कोनो खेल धरती बीच खेलए
खेलए कोनो सतरंगी अकास
कोनो सत् सागर खेलए
चुटकी बजा-बजा रनबास।
विवेकसँ पुछए जखन चित्त
थिसिस एन्टिथिसिसक बीच पड़ए
सिनथिसिस तँ सिनथिसिस छी
अ, उ, म.क विचार करैए। ❑

ऐ पढ़बसँ मुरुखे रहितौं

ऐ पढ़बसँ मुरुखे रहितौं
हरे जोतितौं, कोदारिये पाड़ितौं।
रिकशे चलैबतौं, ठेले ठेलतौं
उपहासक पात्रो तँ नहियेँ बनितौं।
ऐ पढ़बसँ मुरुखे रहितौं।
कियो कहए भुसकौलहा हमरा
कियो कहैत चोरि पास।
कियो कहैत किनुआ डिग्री छी
चारू दिस होइए उपहास।
धौना खसा तँ नहियेँ चलितौं
ऐ पढ़बसँ मुरुखे रहितौं।
नै पढ़ने नहियेँ होइतए
पढ़ुआ कनियासँ बिआह।
नै जोड़ए पड़ैत खर्च सिनेमाक
नै जोड़ए पड़ैत साजो सिंगार
सीना तानि गामोमे चलितौं
ऐ पढ़बसँ मुरुखे रहितौं।
केतएसँ पुराएब खर्च बच्चाकेँ
केतएसँ आनब कनभेंट खर्च।
केतएसँ पुराएब इंग्लीस ड्रेस

केतएसँ आनब आवासीय खर्च।
भाग-भरोसे जे ठेलि पइतौं
ऐ पढ़बसँ मुरुखे रहितौं
कोठीक नोकरी कोठिए करितौं
चोरा-नुका कऽ खुब कमैतौं।
अँगरेजिया फैशनमे सजि-धजि
बम्बैया हीरो कहबितौं
ऐ पढ़बसँ मुरुखे रहितौं। ❑

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक ‘पंगु’ उपन्यासक पछातिक रचना-क्रम:

----------.

पंगु- (उपन्यास) लेखन तिथि: 11 मई 2018 सँ 6 जून 2018

749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018

750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018

751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018

752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018

753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018

754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018

755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018

757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018

758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018

759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018

760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018

761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018

762. आमक गाछी- एक : शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018

763. आमक गाछी- दू : शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018

764. आमक गाछी- तीन : शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018

765. आमक गाछी- चारि : शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018

766. आमक गाछी- पाँच : शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018

767. आमक गाछी- छह : शब्द संख्या: 4701, चोरा चान 12 सितम्बर 2018

768. आमक गाछी- सात : शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018

769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018

770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018

771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018

773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018

774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018

775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018

776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018

777. हमर मेला चोरि भऽ गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018

778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018

779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018

780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018

781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018

782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018

783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018

784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018

785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018

786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018

787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018

788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018

789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018

790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018

791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019

792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019

794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019

795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019

796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019

797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019

798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019

799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019

800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019

801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019

802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019

803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019

804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019

805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019

806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019

807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019

808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019

809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019

810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019

811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019

812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019

813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019

827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019

828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019

829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019

830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019

831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019

832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019

833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019

834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019

835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019

836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019

837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019

838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019

839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019

840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019

841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019

842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019

843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019

844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019

845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019

846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019

847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019

848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019

849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019

850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019

851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019

852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019

853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019
854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019
855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019
856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019
857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019
858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019
859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019
860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019
861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019
862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019
863. कुदृष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019
864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019
865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019
866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019
867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019
868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019
869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019
870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019
871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019
872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019
873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019
874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020
875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020
876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020
877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020
878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020
879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020
880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020

881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020

882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020

883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020

884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020

885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020

886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020

887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020

888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020

889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020

890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020

891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020

892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020

893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020

894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020

895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020

896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020

897. सुचिता- एक : शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020

898. सुचिता- दू : शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020

899. सुचिता- तीन : शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020

900. सुचिता- चारि : शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

901. सुचिता- पाँच : शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020

902. सुचिता- छह : शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020

903. सुचिता- सात : शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020

904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020

905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020

906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020

907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020

908. सुद्दढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020

908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020

909. गामक सूरत बदैल गेल : शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020

910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020

911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020

912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020

913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020

914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020

915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020

916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020

917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020

918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020

919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020

920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020

921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020

922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020

923. नवका लोक : शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020

924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020

925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020

926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020

927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021

928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021

930. मोड़पर- एक : शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

931. मोड़पर- दू : शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

932. मोड़पर- तीन : शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

933. मोड़पर- चारि : शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

934. मोड़पर- पाँच : शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

935. मोड़पर- छह : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

936. मोड़पर- सात : शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

937. मोड़पर- आठ : शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

938. मोड़पर- नअ : शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

939. मोड़पर- दस : शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

940. मोड़पर- एगारह : शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

941. संकल्प- एक : शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

942. संकल्प- दू : शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

943. संकल्प- तीन : शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

944. संकल्प- चारि : शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

945. संकल्प- पाँच : शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

946. संकल्प- छह : शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

947. संकल्प- सात : शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

948. संकल्प- आठ : शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

949. संकल्प- नअ : शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

950. संकल्प- दस : शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

951. अन्तिम क्षण- एक : शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

952. अन्तिम क्षण- दू : शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

953. अन्तिम क्षण- तीन : शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

954. अन्तिम क्षण- चारि : शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

955. अन्तिम क्षण- पाँच : शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021

956. परिवारे गजपटा गेल : शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021

957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021

959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021

960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021

961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021

962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021

963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021

964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021

965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021

966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

967. कुण्ठा- एक : शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

968. कुण्ठा- दू : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

969. कुण्ठा- तीन : शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

970. कुण्ठा- चारि : शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

971. कुण्ठा- पाँच : शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

972. कुण्ठा- छह : शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

973. कुण्ठा- सात : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

974. कुण्ठा- आठ : शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

975. कुण्ठा- नअ : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

976. कुण्ठा- दस : शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

977. सुद्दढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021

978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021

979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021

980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021

981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021

982. टुटि कऽ खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021

983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति. : 03 जनवरी 2022

984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022

985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022

986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022

988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022

989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022

990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022

991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022

992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022

993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022

994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022

995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022

996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022

998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022

999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022

1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022

1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022

1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022

1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022

1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022

1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022

1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022

1008. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022

1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022

1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022

1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022

1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022

1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022

1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022

1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022

1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022

1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022

1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022

1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022

1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022

1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022

1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022

1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022

1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022

1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022

1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022

1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022

1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022

1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1033. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022

1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022

1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022

1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022

1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022

1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022

1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022

1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022

1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022

1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022

1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022

1044. जिनगीकेँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022

1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022

1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1051. ओसचट बीमारी : शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1052. पुत्र परीक्षा : शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1065. सुनयना बेटी : 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

1066. सुनयना बेटी : 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023

1067. सुनयना बेटी : 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023

1068. सुनयना बेटी : 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023

1069. सुनयना बेटी : 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023

1070. सुनयना बेटी : 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023

1071. सुनयना बेटी : 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023

1072. सुनयना बेटी : 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023

1073. सुनयना बेटी : 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी : 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023

1075. आब नइ जीब- शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023

1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023

1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023

1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023

1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023

1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023

1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023

1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023

1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023

1084. रूपैँ बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023

1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023

1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023

1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023

1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023

1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023

1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023

1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023

1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023

1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023

1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023

1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023

1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023

1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023

1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023

1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023

1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023

1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023

1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023

1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023

1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023

1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023

1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023

1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023

1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023

1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि : 10 अगस्त 2023

1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि : 30 अगस्त 2023

1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि : 02 सितम्बर 2023

1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023

1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023

1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023

1115. मुहाँ-ठुठ्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1116. औनाकऽ मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023

1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023

1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023

1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023

1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023

1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023

1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023

1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023

1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023

1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023

1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023

1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023

1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023

1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023

1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023

1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023

1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023

1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023

1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023

1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023

1139. समैया लुच्चा- शब्द संख्या: 1735, तिथि: 07 दिसम्बर 2023

1140. उकडू समयमे सुकडू काज: शब्द संख्या: 1737, तिथि: 10 दिसम्बर 2023

1141. मुक्ति: जारी...

❑❑❑

❑❑

❑

Notes